रात्रिक्लास 17-7-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

रूहानी बच्चे यहां समाने बैठे हैं। शरीर के साथ बैठे हैं। जानते तो होंगे यह बेहद का बाप है और स्वर्ग की स्थापना करने आये हैं। स्वर्ग में जावेंगे जरूर परन्तु ऊंच पद तब पावेंगे जब कि तमोप्रधान से सतोप्रधान बनेंगे। सारी दुनिया के मनुष्य मात्र तमोप्रधान हैं। झाड़ ही पुराना है। पुरानी चीज़ विनाश होती है ना। तो समझते हो पुरानी दुनिया विनाश होनी ही है। हर 5000 वर्ष बाद पुरानी दुनिया विनाश होती है। इन से पहले नई दुनिया की स्थापना होती है। पहले हमेशा कहना है नई दुनिया की स्थापना हो रही है। क्योंकि पुरानी का विनाश होना है। अभी तुम बच्चे जानते हो नई दुनिया स्थापन करने वाले के सामने हम बैठे हैं। वह बाप भी शिक्षा देने वाला भी है। गुरु भी है। सत बाप सत टीची सदगुरु कहा जाता है। अंग्रेजी में सुप्रीम कहा जाता है। सिवाय निराकार बाप के और कोई बाप टीचर गुरु हो न सके। बेहद का बाप तो देह में आते नहीं। कहते हैं मैं इनकी वानप्रस्त अवस्था में प्रवेश करता हूं। बानप्रस्त अवस्था में सदगुरु आ गया तो और सभी को छुट्टी दे दी। सद्गुरु मिला तो भक्ति मार्ग के गुरुओं को क्या करेंगे। सद्गुरु है ज्ञान का सागर बाकी सभी हैं भक्ति के सागर। वह अपन को आलमाईटी नहीं कह सकते। शास्त्रों की अथॉर्टी है। बाप को भी अथार्टी कहा जाता है। बाप कहते हैं मैं इन वेदों-शास्त्रों को नहीं जानते हैं। यह सभी हैं भक्ति मार्ग के। इनको पढ़ने अथवा भक्ति मार्ग के कर्मकाण्डों आद से, इन शास्त्रों आद से मेरे को कोई नहीं मिलते। ब्रह्मा के हाथ में शास्त्र दिखाते हैं। क्योंकि ब्रह्मा हुआ हुआ भगवान का बच्चा। भगवान ज्ञान का सागर है। ब्रह्मा द्वारा सभी वेदों-शास्त्रों आद का राज़ बताते हैं। तुम ने यह शास्त्र आद बहुत पढ़ी है। मेरे को कोई भी प्राप्त नहीं होते। मैं आता हूं पवित्र बनाने लिए। पवित्र बनने बिगर आत्मा वापस जा नहीं सकती। बच्चे अच्छी रीत जानते हैं हम पतित-पावन बाप के सामने बैठे हैं। पावन बनने से हम फिर पावन दुनिया में जावेंगे। पावन दुनिया है दो। शान्तिधाम और सुखधाम। दुःखधाम में कोई भी पवित्र रह नहीं सकते। फिर उनको पवित्र बनावे कौन। नई दुनिया है निराकारी दुनिया। फिर है निर्विकारी दुनिया। निराकारी से निर्विकारी दुनिया शुरु होता है। फिर निर्विकारी से विकारी बनते हैं। यह तो याद है ना! बाप याद न पड़े अच्छा टीचर को याद करो। यह तो तीनों ही एक ही है। एक शिव बाबा। यहां बैठने से तुम बच्चों को बाप और वरसा, सुखधाम और शान्तिधाम याद है। शान्तिधाम-सुखधाम दोनो को याद करते हो। बाकी यह दुःखधाम को भूल जाओ। यह पुराना मकान है। 8 वर्ष के अन्दर तुम कर्मातीत अवस्था को पा लेंगे। फिर तुमको आना है अमरलोक में। मृत्युलोक में आना न है। फिर नई दुनिया में ही जावेंगे। जो सब से पुराना है वह सबसे नया बनेगा। सिर्फ कृष्ण नहीं होगा। प्रजा भी होगी। बदल-सदल कैसे होती है यह तुम आगे चल कर देखेंगे। विनाश होगा फिर भारत में निर्विकारी भी होंगे। जब तक विकारी सभी खलास हो जावेंगे। निर्विकारियों में पहले पहले यह होगा। तुम्हारी राजाई होगी ना। तो तुम्हारे सभी दुःख दूर हो जाते हैं। विकारी की बात ही नहीं। योगबल से तुम विश्व को पवित्र बनाते हो। क्या बच्चे पैदा नहीं हो सकते। 5 विकार होते ही नहीं। वहां विकार हो कैसे सकता। इसमें बात चीत कब न करना चाहिए। मोर है विकार की बात ही नहीं। आंसू से बच्चे पैदा होते हैं। इसलिए उनको भारत का नेशनल वर्डर कहा जाता है। एक तो शोभनिक है दूसरा विकार से पैदा नहीं होता है।

खांसी किसको होती है? आत्मा को या शरीर को? (शरीर को होती है आत्मा महसुस करती है) (जीवात्मा को होती है) (आत्मा को होती है शरीर द्वारा) (कोई ने कहा खांसी आत्मा को होती है शरीर को नहीं होती है) दोनो को होती है। जीवात्मा को होती है। आत्मा कहती है मेरे को खांसी हुई। शरीर तब तो कहती है ना। शरीर को दुःख होता है तो दवाई की जाती है। गोली खाने से दोनो ही दुःख से छूट जावेंगे। फिर आत्मा नहीं कहेगी खांसी है। जीवात्मा को सुख भी होता है तो दुःख भी होता है।

दोनो इकट्ठे हैं ना। जीवात्मा दुःख भी भोगती है तो सुख भी भोगती है। आत्मा भी तमोप्रधान तो शरीर भी तमोप्रधान है। आत्मा कहता है मेरे को खांसी हुई। यह सभी बातें और सतसंगों आद में नहीं होते हैं। वहां तो शास्त्रों पर ही उन्हों का वातावरण चलता है। यहां तो शास्त्र की बात नहीं। वह है भक्ति। भक्ति है तो ज्ञान नहीं। अभी तुम जानते हो हम स्वर्ग के लिए तैयारी कर रहे हैं। इन बातों को और कोई जानते नहीं। समझ भी नहीं सकेंगे। आत्मा तमोप्रधान बनती है तो शरीर भी तमोप्रधान बनती है। आत्मा पढ़ती है शरीर द्वारा। मीठे2 स्वीट चिल्ड्रेन्स प्रित रूहानी एक ही स्वीट बाबा है ना। यह भी कहेंगे स्वीट बाबा। स्वीट बच्चों प्रित बाप दादा का दिल व जान सिक व प्रेम से नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार याद प्यार गुडनाईट। रूहानी बच्चों को रूहानी बा का नमस्ते।

रात्रि क्लास 18-7-68 :-सब से नम्बरवन चित्र है गीता का भगवान कौन? जब गीता का भगवान सिध हो जावेगा तो फिर सर्वव्यापी का ज्ञान उड़ जावेगा। है भारत की ही भूल जो सभी जगह फैल गई है। बाबा भी भारत में, कृष्ण भी भारत में ही हैं। सीढ़ी भी भारत की ही है। तो भारत की ही भूल बाहर चली गई है। गीता का भगवान सिध करने से सर्वव्यापी का ज्ञान उड़ जावेगा। इसलिए बाबा का जोर है। यह भूल भी ड्रामा अनुसार है। फिर होगी। अगर ऐसा होता यह हम कह नहीं सकते हैं। समझाया जाता है भूल न होती, तो फिर चक्र भी नहीं फिरता। ड्रामा ही हार और जीत का बना हुआ है। इसलिए ऐसे भी नहीं कह सकते। समझाया जाता है भगवान गीता सुनाकर स्वर्ग की स्थापन करते हैं। मनुष्य गीता सुनाकर स्वर्ग को नर्क बना देते हैं। इन पॉयन्ट पर जोर दिया जाता है। परन्तु कर ही क्या सकते हैं। आगे चल शायद केस आद हो। कोशिश कर रहे हैं। तुम गवर्मेन्ट को सुधार रही हो। नशा होना चाहिए हम ब्राहमण शुद्र-गवर्मेन्ट का सुधार कर रहे हैं। दैवी गवर्मेन्ट बना रहे हैं। आगे चल जब तुम्हारा झाड़ बढ़ता जावेगा पीछे महसूस करेंगे इन द्वारा मनुष्य स्वर्ग का मालिक बन सकता है। बच्चों को यह समझाया गया है 5000 वर्ष पहले भी तुम ही स्वर्ग के मालिक थे। तुम ही सभी होंगे। तुमको ही बाप का मुंह देखना है, परिचय लेना है जो सतयुग त्रेता वंशी बरसी हैं। ब्राहमण कुल और सूर्यवंशी - चन्द्रवंशी।

अपन में एक ही आदम डालनी है अपन को आत्मा समझ और बाप को याद करना। अभी तुम बच्चे बने हो आस्तिक। आस्तिक उनको कहा जाता है जो बाप को और बाप के रचना के आदि मध्य अन्त ड्युरेशन को जानते हैं। तुमको निश्चय है हम यह जानते हैं। बाप से ही सीखे हो। बच्चे जानते भी हैं। शिव जयन्ती भारत में ही बनाई जाती है। शिव जयन्ति माना ही स्वर्ग की जयन्ती। स्वर्ग की जयन्ति माना ही राजयोग की जयन्ति। बाप राजाओं का राजा बनाते हैं ना। संशय तो नहीं है ना। कल्प2 हर 5000 वर्ष बाद देवती देवताओं की राजाई स्थापन होती है जरूर। अनेकानेक बार अनगिनत बार पास्ट में स्थापन हुई है। होती रहेंगी। ड्रामा तो फिरता ही रहेगा। कब पूरा होने का ही नहीं है। ड्रामा चलता ही रहता है। यह लड़ाई आद भी उसमें हैं। फिर जयजय कार दैवी स्वर्ग की स्थापना होनी है। कलियुग के बाद है सतयुग। यह सतयुगी राज्य स्थापन करने का पुरुषोत्तम संगम युग है। यह बातें बच्चों को कब भूलना नहीं चाहिए। सतयुग में देवताओं का राज्य। कलियुग में रामराज्य है नहीं। फिर होने का है। भगवान आते ही हैं संगम पर। इनका नाम है पुरुषोत्तम संगम युग। अर्थात उत्तम से उत्तम पुरुष बनने का युग। वह तो यह ही है। यह खांसी है दादा का कर्म-भोग। शिव बाबा को खांसी होती होगी। नहीं। अच्छा मीठे2 सिकीलधे बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाईट रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते। नमस्ते।